FLOWER OF ECSTACY

इश्क़ कहा तेरे बिना..इश्क़ तो अच्छी बात है..अगर जीवन में सुगंध ना हो.. बिना इश्क़ के जीवन में सुगंध कैसे हो सकती है, ऐसा तो है नहीं बिना सुगंध के जीवन को जिया जा सकता है, अगर ऐसा होता तो कोई अपने जीवन में सुगंध भर ना रहा होता, हर कोई अपने जीवन में कोई ने कोई सुगंध भर रहा है, पैसे की सुगंध किसको अच्छी नहीं लगती, हर कोई अपने जीवनमे पैसे की सुगंध भरना चाहता है, क्योंकि पैसे से जीवन में बाक़ी सारी सुगंधे भरी जा सकती है, और कारण यह है की बिना सुगंध के जीवन नहीं हो सकता, तो अगर जीवन में इश्क़ हो जाए तो बात बन जाए.. पर "उनके" बिना इश्क़ कैसे हो सकता है, "उनके" सिवा अगर किसी के साथ इश्क़ हो तो वो इश्क़ नहीं है, "उनके" साथ इश्क़ हो तो इश्क़ होश के साथ हो रहा होता है, क्योंकि इस दुनिया में और किसी के साथ इश्क़ करने वाले शायर बन जाते है, बीते जीवन को भूलना नहीं चाहते, इसलिए वो शायरी से अपने जीवन को बेहोशी से भर देते है , क्योंकि दूसरा उन्हें दर्द दे जाता है, पर उनके साथ इश्क़ हो तो बात अलग है, "वह" इश्क़ करने वाले को होश देता है, होश ही जीवन की सुगंध है.. सारा जीवन एक साथ दिखाय देता है, अगर कही जा रहे है, तो जो जा रहा है वह दिखता है, अगर कोई कही जा रहा है तो उन्हें याद होता है है कि वो कहा जा रहा है, क्योंकि जब कोई कही जाता है तो कही जाने के लिए ट्रिगर थॉट पास्ट बन जाता है, क्योंकि की उसके बाद कई सारे विचार, कई सारे द्रश्य, दिमाग़ बहोत सारी चीज़ें एक साथ चलाता है, कई बार लोग भूल जाते है की वो जाने कहा निकले है, अगर जीवन में बेहोशी हो तो यह सब चलता रहता है, अगर कोई कही होश पूर्वक जा रहा है तो वो निरंतर जान रहा होता है की वो कही जा रहा है, तब कहा जाना है वो भूलने का सवाल नहीं है, पैर चल रहे है... वो जनता है वो पैर चला रहा है पर अपने आप में एक होश है, यह याद रखने वाली बात नहीं है, अगर होश हो तो सारी चीज़ें दिखती है, रास्ते से गुज़र रहे है तो सारी चीज़ें दिखाय देती है, पेड़ पौधे है .... दूसरे लोग है.... होश हमें विराट बनाती है और बेहोशी छोटा, इंसान जितना बेहोशी में जिता उतना ही उसे ख़ुद को चीज़ें याद दिलाने में मुश्किल होगी, उन्हें ज़ोर लगाना पड़ता है, पर यह कोई जीवन का इलाज नहीं… इस तरीक़े से जीवन जिया जा नहीं सकता... बिना सुगंध के जीवन में होश कैसे हो सकता है, अगर जीवन जीने में कोई रस ना हो तो जीवन में होश कैसे हो सकता है… तब इंसान बेहोशी के रास्ते खोज लेता है… फिर वो अपने जीवन को बेहोशी से भरना चाहता है, पर यह कोई जीवन का इलाज नहीं…. अगर जीवन में इश्क़ की सुगंध भर जाए तो जीवन में रस भर सकता है… अगर इश्क़ की सुगंध भर जाए तो जीवन में होश आ सकता है, अगर "उनके" प्रति जीवन को ले जया जाए तो यह घटना घट सकती है, जीवन की बगिया में इश्क़ का फूल खिल सकता है।

Aasthit